जलते हुए सवालों का समाधन

रमेश मनोहरा

"बाबूजी" कहकर गंगूबाई मदन मोहन के सामने खड़ी हो गई आँखें उसकी नीचे थी| मदन मोहन अखबार से नजरें हटाकर बोले- हां गंगूबाई क्या कहना चाहती हो?

"बाबूजी आपने दीपावली के बाद कहा था, पैसे बढ़ा दूंगा याद दिला रही हूं"

"हाँ मुझे मालूम है, बढ़ा दूंगा|" कहकर मदन मोहन फिर अखबार पढ़ने लगे| दोनों के बीच कुछ पलों तक सन्नाटा पसरा रहा| मदन मोहन ने देखा गंगूबाई यही खड़ी है, अतः फिर अखबार से नजर हटाकर बोले- सुना नहीं गंगूबाई, मुझे याद है

"सुन लिया बाबूजी?" कहकर गंगूबाई फिर से खड़ी रही

"तो अब जाओ|"

"फिर मुझे याद दिलाने की जरूरत न पड़े|"

"अब गंगू बाई|" अखबार से नजर हटाकर मदन मोहन बोले- मेरी सरकारी नौकरी है, तो तुम यह समझती हो कि मेरी बहुत पगार होगी|

"हां बाबूजी आपकी, बहुत पगार है|" हां में हां मिलाकर गंगू बाई बोली-

"तुम क्या जानो, गंगूबाई, मेरे दोनों बेटे इंजीनियर की पढ़ाई कर रहे है| आधी से अधिक पगार उनकी पढ़ाई में खर्च हो जाती है| बाकी से मेरा घर खर्च चलता है| फिर भी बेटों की पढ़ाई के लिए कर्ज़ लेना पड़ता है| मगर विश्वास दिलाता हूं गंगूबाई मैं तुम्हारे पैसे बढ़ा दूंगा|"

"अब आप जानों बाबूजी, मुझे तो याद दिलाना था दिला दी" कहकर गंगूबाई तो चली गई| वे फिर अख़बार पढ़ने लगे| वे अख़बार जरूर पड़ रहे थे| मगर उनका ध्यान अपनी गृहस्थी पर लगा हुआ था| मदन मोहन बड़े बाबू के पद पर कार्यरत है| अतः सीमित पगार है| उनकी पत्नी माधवी दो साल पहले मझधार में उनका साथ छोड़ गई| जो दो लड़के दे गई| तीसरी संतान उसके साथ हुई थी, लड़की फिर उन्होंने परिवार नियोजन करा लिया मगर लड़की को एक दिन ऐसा बुखार चढ़ा कि कुदरत ने उसे अपने पास बुला लिया| तब उन्होंने अपना सारा ध्यान दोनों बेटो के केरियर बनाने में ही लगा दिया| उनका केरियर बनाने के लिए उन्होंने इस तरह से पढ़ाया ताकि उनकी तरह बेटे फटेहाल न रहे| किसी कवि ने कहा है| "दिवस जात नहीं लागत वारा"कब समय गुजर गया, उन्हें पता नहीं चला| कहने को उनका बहुत छोटा परिवार है मगर बच्चों की पढ़ाई के कारण उनकी सारी पगार इसी में चली जाती है| बीच-

Scanned with OKEN Scanner

बीच में ऐसा अवसर आया कि कड़की भी सहन करना पड़ी| कड़की के साथ उनकी पत्नी माधवी ने कभी धैर्य नहीं खोया| बल्कि साहस दिलाती हुई कहती थी| धैर्य रखो, सब दिन एक जैसे नहीं है, हम बच्चों के केरियर के लिए पैसा खर्च कर रहे है| बाद में सुख के दिन भी आयेंगे|

“हाँ माधवी तुम ठीक कहती हो| तुम में कितना धैर्य है, वह मैंने जाना”

“आखिर पत्नी किसकी हूं”

“एक फटीचर बाबू की”

“अपने को फटीचर मत कहिये, नहीं तो तुमसे नहीं बोलूंगी|”

“ठीक है बाबा अब नहीं कहूंगा|”कहकर उस दिन उन्होंने माधवी से क्षमा मांग ली| कितने जीवटता थी माधवी में उम्र भर आभाव घूटन झेलती रही| अर्थ मुद्रा में टूटती रही| फिर भी अपने को टूटा हुआ नहीं पाया चेहरे पर कभी गुस्सा भी नहीं लाई| बच्चों की परवरिश करने में कोई कसर भी नहीं छोड़ी बच्चे जब छोटे थे| तब भी वह उन पर प्यार लुटाती रही| वे जब भी बच्चों को डॉट देते थे| तब माधवी उन पर बहुत नाराज हो जाया करती थी| इस तरह पति-पत्नी के बीच प्यार और तकरार चलती थी| सच, माधवी कठिन परिस्थितियों से भी नहीं घबराती थी| बल्कि उन्हें भी साहस दिलाती थी|

जब उनके दोनों बच्चे विनय और प्रभात ने हायर सेकेण्डरी अच्छे अंको से पास कर ली, तब उन्हें इंजीनियर कॉलेज उज्जैन में एडमिशन मिलने में कोई परेशानी नहीं हुई| उनका सिलेक्शन हो गया| तब माधवी कितनी खुश हुई थी| तब उन्होंने कहा था| माधवी यह सब तुम्हारी त्याग की वजह से हुआ| तुमने अपने बच्चों को ऐसा ढाला कि दोनो इंजीनियर बनकर निकलेंगे|

“मेरे साथ आपका भी योगदान है, आप इन्हें रास्ता नहीं बताते तो इस मंजिल तक पहुँच नहीं पाते”

“अब माधवी तुम्हारे सुख के दिन आयेंगे जब तुम्हारे दोनों बेटे इंजीनियर बनकर आयेंगे|”

सच उस दिन वे कितने खुश हुए थे | उनकी खुशी का पारावार न था| बच्चें उज्जैन के इंजीनियर कॉलेज में पढ़ रहे थे| इधर दोनों उस दिन का इंतजार कर रहे थे| जब दोनों इंजीनियर बनकर आयेंगे| जहाँ भी उनकी नियुक्ति होगी फिर उनकी शादी करना पड़ेगी बच्चे होगें और वे दादा-दादी बन जायेंगे| ऐसे सपने वे दोनों देखा करते थे| सचमुच माधवी बहुत प्रसन्न रहा करती थी| वो कई-कई सपने देखा करती थी| ऐसे सपने जो हर महिला देखती थी|

मगर सपने, सपने होते है वे कभी पूरे होते है| हंसी खुशी के इस घर में न जाने किसकी नजर लग गई| वे तो अपने कार्यालय गये थे| दोपहर में उनके पास फोन आया था| माधवी की तबीयत खराब हो गई| वे घर पहुँचे, तब तक माधवी का शरीर ठंडा पड़ चुका था| आसपास के लोग इकठ्ठे हो गये थे| उन्होंने बताया सीने में जोर का दर्द उठा था, माधवी को हार्ट अटेक जोरदार आया था पहले ही अटेक में ऊपर वाले ने अपने यहाँ बुला लिया, माधवी क्या गई? वे अनाथ हो गये? 13वी तक तो

Scanned with OKEN Scanner

रिश्तेदारों का जमावड़ा रहा| मगर उनकी बहिन शुरूआत के दो महिने रही| बिना औरत के घर कितना सुना लगता है| यह माधवी के जाने के बाद उन्होंने मेहसूस कर लिया था|

अब समस्या यह थी, दोनों लड़के इंजीनियर कॉलेज में पढ़ रहे है| तब घर में वे अकेले रह गये| चौके चूल्हे के काम से लेकर घर का सारा काम उन्हें ही करना पड़ा| मगर इस काम से वे थक जाते थे| तब उनके पड़ौसी अरविन्द वर्मा ने एक दिन कहा-अरे मदन मोहन जी कब तक अकेले रहोगे?

"क्या कहना चाहते है आप?"मदन मोहन ने पूछा|

"जब से भाभी जी गुजरी है आप अकले हो गये?"

"हाँ माधवी के जाने से मेरा एक अंग टूट गया|"

"उस अंग को आप लगा सकते हो?"

"कैसी बात करते है आप? क्या कहना चाहते है|"

"मैं चाहता हूं आप फिर से शादी कर ले| आपको जीवन साथी मिल जायेगा और बच्चों को नई माँ"

"आप कैसी बात करते है? आधी उम्र ऊपर हो गई मेरी और मैं शादी करूंगा|"

"क्यों नहीं, कर सकते है? आधी उम्र वाले बूढ़े भी शादी कर रहे है क्योंकि बिना औरत के घर नहीं चलता है|"

"मगर मैं दूबारा शादी कर माधवी का विश्वास नहीं तोड़ना चाहता हूं|"इंकार करते हुए वे बोले-

"तब नौकरी के साथ कैसे चौका चूल्हा संभालोगे|"

"जैसे औरतें संभालती है जो नौकरी भी करती है चौका चूल्हा भी संभालती है|"

"मगर औरतें एक्सपर्ट होती है वे चौका चूल्हा बहुत अच्छा संभालती है| अतः एक बार फिर कहता हूं| मदन मोहनजी इस बारे में एक बार फिर सोचे|"

"मैंने अच्छी तरह सोच लिया है वर्मा जी|"अपना तटस्थ उत्तर देकर मदन मोहन बोले-शादी तो मैं करूंगा नहीं|

"ठीक है, लेकिन एक काम तो कर सकते है|"सलाह देते हुए अरविन्द वर्मा बोले-

"झाड़ू बुआरा बर्तन मांजने और रोटी बनाने के लिए मेहरी तो रख सकते है|"

"हाँ यह कर सकता हूं है कोई आपकी नज़र में|"

"हाँ है तो सही, मगर तुम उसे नहीं रख सकोगे|"

"क्यों भला, मैं क्यों नहीं रख सकूंगा|"

"क्योंकि वो दलित है और आप ब्राम्हण है|"

"देखिये वर्मा जी, वो दलित है तो क्या हुआ है तो औरत अब जमाना बहुत बदल गया| मगर जो भी औरत लावे वो ईमानदार हो तथा रोजाना समय पर आकर काम करें|" कहकर मदन मोहन ने यह शर्त रख दी|

Scanned with OKEN Scanner

फिर उन्होंने गंगू बाई की व्यवस्था कर दी| वो उनकी नजर में खरी उतरी| नियमित समय पर आती अपना काम करती| उनके दफ्तर जाने से पहले सारा काम निपटा देती थी| उम्र उसकी 40-45 के आसपास होगी गठे हुए शरीर के कारण 25-30 वर्ष की लगती थी| सुबह शाम बड़ी ईमानदारी से अपना काम करती थी| जिस दिन उसको नहीं आना होता तब वो अपनी जवान लड़की को भेजती थी| मां की तरह वो भी काम में होशियार थी|

इस तरह गंगूबाई ने काम से उनका मन जीत लिया| उसे काम करते हुए दो साल हो गये| उनके दोनांे पुत्र की इंजीनियर की पढ़ाई का आखरी साल था| वे इंजीनियर बनकर नौकरी पा जायेंगे| उनका और उनकी स्व| पत्नी माधवी का मिशन पूरा हो जायेगा| फिर उनकी शादी करके उनका घर बसा देंगे| इस तरह वे अपने पिता के दायित्व से मुक्त हो जायेंगे| जब वे दो साल बाद सेवा निवृत हो जायेंगे ऐसे में बारी-बारी से लड़कों के पास रहेंगे| वैसे गंगूबाई ने गृहस्थी का सारा काम करके माधवी की याद को जरूर विस्मृत कर दिया| अतः उसकी सेवा से खुश होकर उस दिन बोले गंगूबाई, मैं तुम्हारे काम से खुश हूँ|

“अब आप खुश है तो रूपयै बढ़ा दीजिए न|”गंगूबाई ने जब यह कहॉ वे कोई जवाब नहीं दे पाये| क्षण भर प्रतीक्षा के बाद गंगूबाई फिर बोली- बाबूजी आपने जवाब नहीं दिया|

“हाँ दीवाली के बाद बढ़ा दूंगा|”उस दिन उन्होंने आश्वासन दे दिया| फिर आगे बोले- सचमुच गंगूबाई, माधवी भी तुम्हारी तरह घर का सारा काम संभालती थी|

“सच कहते हो बाबूजी, जब ड्राईंगरूम में बाईजी की टंगी तस्वीर देखती हूँ, तो उनमें खुद को पाती हूँ|”कहकर गंगूबाई ने नजरे झुका ली| क्षण भर बाद फिर बोली- बाबूजी, आप शादी क्यों नहीं कर लेते हो, अपनी ही बिरादरी में|

यह कहकर गंगूबाई तो चली गई| मगर उनके भीतर जलते हुए कई सवाल छोड़ गई| गंगूबाई का यह कहने के पीछे क्या आशय है? कहीं उसके मन में उनके प्रति प्रेम तो नहीं जग रहा है| उधर अरविन्द वर्मा ने भी तो उनकी शादी के लिए कितना उकसाया| गंगूबाई को कितना बढ़ाना है, यह उनसे बात करके ही, लो उनका नाम लिया, और ये हाजिर| तब मदन मोहन उन्हें देखकर बोले- आईये वर्मा जी, अभी मैं आपको याद कर रहा था| तब अरविन्द वर्मा बैठते हुए बोले- मुझे क्यों याद कर रहे थे|

“अरे मैंने दीवाली से पहले गंगूबाई से कहा था, दीवाली के बाद पैसा बढ़ा दूँगा|”

“हाँ तो बढ़ा दीजिए न|”

“आप तो ऐसी बात कर रहे है, वर्माजी जैसे मेरे पास कुबेर का खजाना है|”

“ठीक है तो आप एक काम कीजिए|”

“कौनसा काम?”प्रश्नवाचक दृष्टि से मदन मोहन बोले|

Scanned with OKEN Scanner

"गंगूबाई से शादी कर लीजिए, सारी झंझट दूर|"

"कैसी बात करते हो वर्मा जी, गंगूबाई शादी शुदा है|"

"तो क्या हुआ?- ये छोटे लोग है अपने पति को छोड़कर आपसे शादी कर लेगी कहो तो मैं बात चलात हूँ|"हंसते हुए अरविन्द वर्मा बोले|

"कैसी बेसिर पैर की बात कर रहे हो?"जरा नाराजी से मदन मोहन बोले

"अरे मदन मोहनजी, मैं तो मजाक कर रहा था| चलो दो सो रूपयै बढ़ा दो| गंगूबाई बहुत ईमानदार महिला है|"अरविन्द वर्मा बोले|

"आप कहते है तो दो सौ रूपयै बढ़ा देता हूँ|"अपनी सहमति देते हुए मदन मोहन बोले| फिर क्षणभर रूककर बोले- धन्यवाद वर्मा जी, आपने मेरे जलते हुए सवाल का समाधान कर दिया|

कृष्ण जन्माष्टमी की हार्दिक शुभकामनाये

Scanned with OKEN Scanner